By- Dr. Ramendra Kr. Singh
Deptt of Psychology,
D.K. College, Dumraon
(Buxar)

असामान्य व्यवहार परिभाषा की एवं विशेषताएँ

B.A - Part -(I)
Psychology (Hons & Sub)
Paper II
Abnormal Psychology

By Dr. Ramendra Kr. Singh
D.K. College,
Dumraon

Abnormal behaviours and it's characteristics

मनोविज्ञान अनुभूति एवं व्यवहार का विज्ञान है। व्यवहार मूलतः दो प्रकार के होते हैं- (I) सामान्य व्यवहार (II) असामान्य व्यवहार' असामान्य मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यक्ति के असामान्य अनुभूतियों एवं व्यवहारों से है' असामान्य व्यवहार से तात्पर्य व्यक्ति की कुसमायोजित व्यवहारों से है। ऐसे व्यवहार सामान्य व्यवहार की तुलना में सामान्यतः अचेतन से निर्देशित होते हैं। अर्थात असामान्य व्यवहार का ज्ञान मनुष्य की चेतना (Present Mind) में कम ही होती है या, धुंधला होता है।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने असामान्यता की व्याख्या शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखकर किये हैं' इन लोगों के अनुसार 'असामान्य' शब्द अँग्रेजी भाषा के 'ABNORMAL' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है जिसकी व्युत्पत्ति लैटिन शब्द Anomalous से हुई है जिसका अर्थ अनियमित (irregular या Not regular) होता है। इसी अर्थ में ये लोग 'अनियमित व्यवहार' को असामान्य व्यवहार कहते हैं।

इसी प्रकार कुछ विद्वान 'Abnormal' शब्द की व्याख्या या विश्लेषण कुछ दूसरे अंदाज में करते हैं। असामान्य 'अर्थात' जो सामान्य न हो यानि सामान्य के विपरीत हो उसे असामान्य कहा जाता है' ठीक इसी प्रकार 'ABNORMAL' शब्द AB+NORMAL दो शब्दों के मेल से बना है जिसका अर्थ होता है- एब (Ab) यानि दूर (Away) तथा नार्मल (Normal) का अर्थ सामान्य होता है। अतः संयुक्त रूप से Abnormal शब्द का अर्थ "सामान्य से हटकर होता है' दूसरे शब्दों में वैसे व्यवहार जो सामान्य व्यवहार से परे या अलग होता है, उसे असामान्य व्यवहार कहेंगे"

Scanned By Scanner Go

अब तक की व्याख्या से पता चलता है कि उपर्युक्त बातें प्रकट व्यवहार (overt behaviour) पर कुछ ज्यादा ही जोर दे रही हैं और सतही स्वरूप की हैं। वर्तमान असामान्य व्यवहार कुछ अन्य बातों को भी समाहित किया गया है। अब इसे व्यापक अर्थ में लिया जाता है। किश्कर के शब्दों में :-

"Human behaviour and experiences which are strange, unusual or different ordinerily are considered abnormal." अर्थात मानव के वैसे व्यवहार और अनुभूतियाँ जो साधारणतः अनोखी, असाधारण या पृथक हैं, असामान्य समझी जाती हैं। इसी प्रकार कारसन, बूचर और मीनेक (Carson, Butcher & Mineka DGI) (2005) ने असामान्य व्यवहार को परिभाषित करते हुए कहा है :-

"Abnormal behaviour refers to maladaptive behaviour detrimental to an individual and/or a group."

यानि

"असामान्य व्यवहार से तात्पर्य अपअनुकूली (Maladaptive) व्यवहार से है, जो व्यक्ति विशेष अथवा समूह के लिए हानिकारक होता है।"

उक्त दोनों परिभाषाओं का विश्लेषण करने से असामान्य व्यवहार से सम्बन्धित कुछ विशेष बातें स्पष्ट हो जाती हैं। उन्हे सरल भाषा में कहा जा सकता है कि "जो व्यवहार किसी राष्ट्र, समाज एवं संस्कृति के मानक से विचलित होते हैं, उन्हें असामान्य व्यवहार कहा जायेगा, ऐसे व्यवहार प्रायः व्यक्तिगत समायोजन और सामाजिक समायोजन (Personal & Social adjustment) में बाधा उत्पन्न करते हैं।"

असामान्य व्यवहार की विशेषताएँ :-

Scanned By Scanner Go

असामान्य व्यवहार की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं जिससे पहचानना आसान हो जाता है।—

(1) परिस्थिति के अनुरूप नहीं - असामान्य व्यवहार की सबसे बड़ी विशेषता है कि ऐसे व्यवहार परिस्थिति के अनुरूप नहीं होते हैं। जैसे कोई नौजवान व्यक्ति की दुःखद मृत्यु की समाचार सुनकर कोई ठहका मारकर हँसता है, उछल-कूद करता है, जश्न मनाता है, तो उसे असामान्य व्यवहार कहा जायेगा। असामान्य व्यक्तियों पर समाज में घटित घटनाओं पर परिस्थिति के विपरीत व्यवहार करते हैं।

(2) समाज कल्याण का अभाव :- असामान्य व्यवहार की दूसरी बड़ी विशेषता है। इस तरह के व्यवहार में समाज कल्याण अथवा समाजहित की भावनाओं का अभाव होता है। ऐसे व्यवहार समाज कल्याण के विरुद्ध होते हैं; समाज के लिये खतरा पैदा करनेवाले होते हैं। असामान्य व्यक्ति संकट के समय समाज का संकट और बढ़ाने वाले व्यवहार करते हैं; समाज को बचाने वाला व्यवहार नहीं करते हैं। इसका ताजा उदाहरण कोरोना विषाणु से संक्रमित कुछ लोग अपराध व्यवहार कर रहे हैं जिससे समाज एवं राष्ट्र के लिए समस्या उत्पन्न हो गया है। ऐसा व्यवहार इसलिये हो रहा है कि ऐसे लोग हताश एवं निराश हैं, असामान्यता से ग्रस्त हो गये हैं। अचेतन भय उन्हें प्रेरित कर रहा है।

(3) स्वयं के लिये हितकर नहीं :- असामान्य व्यवहार की तीसरी बड़ी विशेषता है-ऐसे व्यवहार स्वयं अपने-आप के लिये भी अहितकर होता है। ये अपनी आवश्यकताओं के प्रति उदासीन होते हैं। यदि उन्हें समाज द्वारा सहारा नहीं दिया गया तो कुछ दिनों तक जिन्दा नहीं रह सकते हैं।

Scanned By Scanner Go

(4) सामाजिक अन्तःक्रियाओं का अभाव :- असामान्य व्यक्ति वाले व्यक्तियों में मिलजुल कर रहने की क्षमता का अभाव होता है। अपने पड़ोसियों से सम्बन्ध बिगाड़ लेते हैं। वे समाज में सफल अभियोजन करने में असमर्थ होते हैं क्योंकि इनका व्यवहार विचित्र होती है।

(5) निर्धारित नियम से असंगतता :- असामान्य व्यवहार की एक विशेषता यह भी है कि ऐसे व्यवहार वास्तव में निर्धारित नियम के विरुद्ध होते हैं। प्रत्येक देश, समाज एवं संस्कृति की अपनी कुछ नियम एवं कायदे कानून होते हैं। उन नियमों के प्रतिकूल व्यवहार असामान्य व्यवहार कहलायेगा। जैसे आजभी हमारे देश में Homosexuality behaviour को असामान्य व्यवहार कहा जाता है, जबकि वर्तमान कुछ देशों मान्य हो गया है।

(6) औसत से विचलन :- असामान्य व्यवहार की यह एक बड़ी विशेषता है। ऐसे व्यवहार औसत लोगों द्वारा किये जाने वाले व्यवहार से अलग स्वरूप के होते हैं। जैसे औसत व्यक्ति रात में सोने से पहले जाँच कर लेते हैं कि गेट में ताला बन्द है कि नहीं? लेकिन कोई व्यक्ति बार-बार रात भर गेट पर जाकर जाँच करता रहे कि ताला बन्द है कि नहीं! तो यह Abnormal behaviour है।

(7) संवेगात्मक अपरिपक्वता :- असामान्य व्यवहारों में संवेगात्मक अपरिपक्वता झलकता है। बिना किसी कारण के रोना या हँसना, दुःखद घटना पर हँसना, सुखद पर रोना ये सब असामान्य व्यवहार हैं।

(8) दुर्बल अनुकूली मूल्य (Poor adaptive value) :-

Scanned By Scanner Go

ऐसे व्यवहारों में अनुकूलन का अभाव होता है। परिस्थिति में बदलाव होने पर व्यवहार में भी बदलाव हो जाता है, लेकिन असामान्य व्यवहार में यह विशेषता नहीं पाई जाती है।

(ग) उपर्युक्त विशेषताओं को बारीकसे अध्ययन करने पर स्पष्ट हो जाता है कि असामान्यता एवं असामान्य व्यवहार या असामान्य व्यक्ति की पहचान उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर किया जा सकता है। ~~सामान्यता~~ अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि "सामान्यता और असामान्यता के बीच मात्रा (Degree) तथा प्रकार (Kind) ~~का अंतर~~ दोनों का अन्तर है।

Dr. Ramendra Kumar Singh
ramendrasinghdkc@gmail.com
HOD
Psychology
D.K. College,
Dumraon

Scanned By Scanner Go